पाठ – 1.3

DX9EL1

बादल को घिरते देखा है

नागार्जुन

जीवन परिचय

हिन्दी और मैथिली के प्रमुख लेखक व कवि नागार्जुन का जन्म 30 जून 1911 को मधुबनी, बिहार के सतलखा गाँव में हुआ। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु हिंदी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ कीं। खेतिहर परिवेश में पले–बढ़े नागार्जुन की आरंभिक शिक्षा संस्कृत में हुई तथा आगे उन्होंने स्वाध्याय पद्धति से ही शिक्षा पूर्ण की। उन्होंने लगभग सभी विधाओं में लिखा। उन्होंने एक दर्जन कविता संग्रह, दो खण्ड काव्य तथा छः से अधिक उपन्यास लिखे। इनमें से कविता संग्रह– ***अपने खेत में, युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, रत्नगर्भ, उपन्यास– रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, कुंभीपाक*** *आदि मैथिली रचनाएँ–* ***चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ*** *(कविता संग्रह),* ***पारो, नवतुरिया*** *(उपन्यास) आदि प्रमुख रही हैं। इसके अलावा बाल साहित्य व बांग्ला रचनाएँ भी काफ़ी चर्चित हैं। 1965 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 5 नवम्बर 1998 को उनकी मृत्यु हो गई।*

अमल धवलगिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

छोटी–बड़ी कई झीलें हैं
उनके श्यामल–नील सलिल में
समतल देशों से आ–आकर
पावस की ऊमस से आकुल

तिक्त–मधुर बिसतंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थीं
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक–दूसरे से विरहित हो
अलग–अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशाकाल के चिर–अभिशापित
बेबस उन चकवा–चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत–सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो–होकर
तरल–तरूण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

शब्दार्थ

अमल – निर्मल; **धवल** – श्वेत; **शिखर** – चोटी; **तुहिन** – ओस; **बालारूण** – ऊगता हुआ सूरज; **श्यामल** – कृष्ण वर्ण; **नील सलिल** – नीले रंग का पानी; **बिसतंतु** – कीड़े–मकोड़े; **मृदु** – कोमल; **विरहित** – विरह से पीड़ित; **अभिशापित** – जिसे शाप मिला हो; **क्रंदन** – दुःख भरा रूदन; **दुर्गम** – जहाँ कठिनाई से पहुँचा जाए; **अलख** – जिसे देखा ना जा सके; **परिमल** – खुशबू, सुगंध।

अभ्यास

पाठ से

1. मानसरोवर के कमल को स्वर्णिम कमल कहने का क्या आशय है?
2. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के प्रकृति चित्रण को अपने शब्दों में लिखिए।
3. कवि चकवा–चकई द्वारा किन मनोभावों को कविता में बताना चाहते हैं?
4. कवि ने कस्तूरी मृग का उल्लेख किस संदर्भ में किया है?
5. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थी
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे

(ख) दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत–सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल

पाठ से आगे

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में ऊगते हुए सूर्य और उस समय के प्राकृतिक दृश्य का चित्रण हुआ है। उसी प्रकार अस्त होते सूर्य के संध्याकालीन दृश्य पर समूह में बैठकर चार–छः पंक्तियों की कविता रचना कीजिए।

2. यहाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की कविता 'सखि वसंत आया' का कुछ अंश दिया जा रहा है। बसंत ऋतु में प्रकृति किस प्रकार का रूप धारण करती है? पंक्तियों के आधार पर उसके सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

सखि वसंत आया

भरा हर्ष वन के मन

नवोत्कर्ष छाया।

किसलय–वसना नववय–लतिका

मिली मधुर प्रिय–उर तरू–पतिका

मधुप–वृन्द बन्दी

पिक स्वर नभ सरसाया।

लता–मुकुल–हार–गन्ध–भार भर

वही पवन बंद मन्द मन्दतर

जागी नयनों में वन–

यौवन की माया।

3. कविता में प्रवासी पक्षियों का उल्लेख किया गया है। पता कीजिए मौसम के किस बदलाव के कारण प्रतिवर्ष प्रवासी पक्षी अनुकूल जलवायु के लिए दूर देश से आते हैं? साथ ही यह ज्ञात कीजिए कि भारत में प्रवासी पक्षी कहाँ–कहाँ से आते हैं, कितने समय तक ठहरते हैं और कब लौटते हैं?

भाषा विस्तार

1. अनिल, अनल जैसे युग्म शब्द, श्रुति समभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। ऐसे ही सुनने में समान परंतु भिन्न अर्थ वाले कुछ युग्म शब्द दिए जा रहे हैं :–

DXS6PB

अंश – हिस्सा	अभिराम – सुन्दर
अंस – कंधा	अविराम – लगातार
अपेक्षा – इच्छा	
उपेक्षा – निरादर	

आप भी ऐसे युग्म शब्द खोंजें एवं उसके अर्थ पता करें।

2. कविता में 'अमल', 'समतल', 'सुप्रभात', 'अभिशापित', 'दुर्गम', 'उन्मादक' आदि शब्द आये हैं।

(क) उपर्युक्त शब्दों में निहित उपसर्गों को अलग कीजिए यथा – अ + मल।

(ख) इन उपसर्गों के योग (मेल) से बने पाँच–पाँच अन्य शब्दों को लिखिए।

प्रायोजना–कार्य

1. विद्यालय के पुस्तकालय से प्रकृति–चित्रण की अन्य श्रेष्ठ कविताओं का संकलन कीजिए और कविताओं में निहित प्रकृति के सौंदर्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

2. माखन लाल चतुर्वेदी की कविता– 'दूबों के दरबार में' में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का बखूबी चित्रण हुआ है। इसे भी पढ़िये।

EA6F5V

क्या आकाश उतर आया है
दूबों के दरबार में
नीली भूमि हरी हो आई
इस किरणों के ज्वार में
क्या देखे तरूओं को उनके
फूल लाल अंगारे हैं,

वन के विज़न भिखारी ने
वसुधा में हाथ पसारे हैं
नक्शा उतर गया है, बेलों
की अलमस्त जवानी का
युद्ध ठना, मोती की लड़ियों से
दूबों के पानी का!

तुम न नृत्य कर उठो मयूरी
दूबों की हरियाली पर
हंस तरस खाएँ उस मुक्ता
बोने वाले माली पर
ऊँचाई यों फिसल पड़ी हैं
नीचाई के प्यार में
क्या आकाश उतर आया है
दूबों के दरबार में?

●●●

बाल विवाह निषेध अधिनियम

बाल विवाह पर रोक लगाने हेतु 1929 में एक अधिनियम पारित हुआ था जिसे 'शारदा एक्ट' के नाम से जाना जाता है। यह अधिनियम प्रभावी नहीं हुआ अतः 1978 में इसमें संशोधन किया गया, इसी संशोधित अधिनियम को 'शारदा बाल विवाह निरोधक अधिनियम के नाम से जाता है। 2006 में एक बार फिर पूर्व के अधिनियमों से अधिक प्रभावशील बाल विवाह निषेध अधिनियम बना जो 01 नवम्बर 2007 में लागू हुआ। यह अधिनियम बाल–विवाह को सख्ती से प्रतिबंधित करता है। इस अधिनियम के अनुसार विवाह के लिए लड़की की उम्र 18 वर्ष तथा लड़के की उम्र 21 वर्ष से कम न हो। नियम की अवहेलना होने की स्थिति में कठोर कार्यवाही का प्रावधान है। इतना ही नहीं बाल–विवाह होने की स्थिति में संबंधित (बच्चा/बच्ची) वयस्क होने के दो साल के अंदर अपनी इच्छा से अपने बाल–विवाह को अवैद्य घोषित कर सकता है, किन्तु यह कानून इस्लाम धर्मावलम्बियों पर लागू नहीं होता।

ऐसा मानना है कि बाल–विवाह किसी बच्चे को अच्छे स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा के अधिकार से वंचित करता है, साथ ही कम उम्र में विवाह से लड़के और लड़कियाँ दोनों पर शारीरिक बौद्धिक मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक प्रभाव पड़ता है, व्यक्तित्व का विकास सही ढ़ग से नहीं हो पाता। कम उम्र में विवाह के कारण लड़कियों को हिंसा, दुर्व्यवहार और उत्पीड़पन का सामना करना पड़ता है।